P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-7* March- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन

जी एल जयपाल
प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
श्री राजेन्द्र सूरि कुन्दन जैन
राजकीय महिला महाविद्यालय,
जालोर,राजस्थान

सारांश

विवेकानंद प्रायः युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत के तौर पर जाने जाते हैं किन्तु उनके प्रभाव का दायरा समग्र है। वे अपने समय के और कदाचित आध्यात्मिक युग के समूचे के श्रेष्ठ अध्येता हैं। शिकागो विश्वधर्म सम्मेलन से लेकर कन्याकुमारी तक का उनका दार्शनिक योगी और ज्ञानी हो जाने का सफर अपने आप में महत्वपूर्ण है। अपने विचारों को साधारण जीवन व्यवहार से जोड़कर विशिष्ट आयाम और आनंददायी परिणाम देने की युक्ति बताने का मानसिक सामर्थ्य जितना विवेकानंद में हैं। उतना अन्यत्र नहीं। विवेकानंद अपने नाम के अनुरूप ही विवेक और आनंद का पवित्र मिश्रण थे जिनका प्रभाव युग–युग तक कायम रहेगा। भारतीय संस्कृति, समाज, दर्शन, अध्यात्म और अन्योन्येक पक्षों की विवेचना करने में उन्होंने उत्कृष्टता का परिचय दिया है। एक कुटिया में रहने वाले गरीब मजदूर से लेकर आलीशान महलों में रहने वाले धनिकों तक के लिए विवेकानंद के पास वैचारिक चिकित्सा और विकास गायी सिद्धान्त उपलब्ध रहे हैं। भारतीय जन जीवन के नैतिक विघटन को रोकने और उसे सकारात्मक मार्ग की ओर ले जाने में स्वामी जी ने जो कार्य किया वह कोई विरला ही कर सकता है। उन्होंने एक संन्यासी और योगी की परिभाषा को चरितार्थ तो किया ही, उसे विकसित और समृद्ध भी किया। भारतीय शिक्षा पद्धति पर प्रस्तुत उनके विचार हमारी शैक्षिक व्यवस्था के ढाँचें में आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता जताते हैं। स्त्री शिक्षा और नारी सशक्तिकरण के भी वे पक्षधर थे। धार्मिक सहिंष्णुता की आवश्यकता पर उन्होंने सदैव बल दिया और अस्पश्यता जैसे अमानवीय आचरण को उन्होंने मानव जाति के विरूद्ध ठहराया। उन्होंने जाति और वर्ग भेद मिटाने की बात की। खेलों के माध्यम से शारीरिक व मानसिक सिद्धान्त का विचार भी उनके अग्रगण्य विचारों में सम्मिलित है। प्रकृति संबंधी उनके विचार पर्यावरण संरक्षण और जीव कल्याण का आह्वान करते हैं। वास्तव में विवेकानंद मन से अधिक आत्मा पर प्रभाव डालते हैं। वे साहित्य को जीवन का अंग मानते हैं। श्रेष्ठ पुस्तकें पढ़ने की आवश्यकता जताते हैं ताकि नैतिक, मानसिक और व्यावहारिक विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके। आज के युग में भी उनके विचारों और सिद्धान्तों की प्रासंगिकता बनी हुई है और उनको भुलाने की बजाय याद करने पर ही अधिक बल दिया जाता है। कदाचित विवेकानंद प्रत्येक भारतीय की आत्मा की आवाज पहचानते थे तभी तो उनके व्यक्तित्व का साधारणीकरण भारतीयों में नैतिकता, ओज, कर्मठता और सहयोग व समरसता का भाव जीवित रखने में सहायक रहा है।

मुख्य शब्द : आध्यात्मिक , संस्कृति, शिक्षा पद्धति , समरसता , दर्शन

प्रस्तावना

शिखर पुरुष स्वामी विवेकानंद का जीवन, दर्शन और व्यवहार सर्वयुग में प्रेरणादायी है। दर्शन मानव जीवन के व्यवहार को नियत व प्रेरित करने वाला दृष्टिकोण होता है और स्वामी विवेकानंद का दर्शन अन्य विद्वानों के मुकाबले मानवीय जीवन व्यवहार की सटीक व अधिक स्पष्ट व्याख्या करता है। स्वामी जी ने विदेश में जाकर भी अपने मूल्यों और व्यवहार के शुचित पक्ष तथा सकारात्मक स्थिति की अक्षुणता कायम रखी वह अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रायः पाश्चात्य देशों में जाने वाले लोगों पर पाश्चात्य व्यवहार मूल्यों तथा सभ्यता का प्रभाव अधिक हो जाता है। 'मधुमती' के पूर्व संपादक श्री उमराव सालोदिया ने लिखा है–''स्वामी विवेकानंद भारतीय संस्कृति और वैदिक ऋषि परम्परा के आदर्श प्रतिनिधि थे। उनके कार्य, विचार और ज्ञान युवाओं के लिए आदर्श और प्रेरणास्त्रोत के रूप में रहे हैं।''[1]

वास्तव में विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति के अन्तस और आत्मिक स्वरूप को समझने पर बल दिया था। उन्होंने संस्कृति व्यावहारिक व सकारात्मक

रूप को अंगीकार करने का पक्ष लिया, संस्कृति विचारों और समय विशेष के व्यवहार की घोतक और सामाजिक सभ्यतागत अजस्त्र धारा है। बकौल राजाराम भाई ''संस्कृति एक व्यापक फिनोमेना है जो जटिल और गतिशील है। इसमें प्रकृति और मनुष्य के द्वन्द्व और साहचर्य से उपजी तमाम उपलब्धियों का एक भाग शामिल है। इन उपलब्धियों के भौतिक स्वरूपों को हम सभ्यता के दायरे में रखते हैं।'' [2]

विवेकानंद ने नास्तिक और आस्तिक की परिभाषा को स्पष्ट रूप से सरल अर्थों में सामने रखा उनका मानना था कि नास्तिक वो नहीं जो ईश्वर में आस्था नहीं रखता बल्कि नास्तिक वो है जो स्वयं में आस्था नहीं रखता है' ..... स्वामी जी का ध्यान युवा वर्ग के संबोधन पर अधिक रहा है क्योंकि युवा किसी भी देश का भविष्य होता है और उसी पर आने वाले कार्यों का भार भी रहता है। ..... स्वामी जी मानव मात्र की समानता पर बल देने वाले महापुरुष थे..... उन्होंने जाति, वर्ग और धर्म से ऊपर उठकर कर्मठता, समर्पण और मानवीयता पर बल दिया। .... कमल किशोर गोयनका ने लिखा है '' देश की वर्ण एवं जाति व्यवस्था के दोषों के लिए उन्होंने धर्म और जाति को सर्वथा निर्दोष पाया। उनका कथन था कि धर्म का संबंध केवल आत्मा से है और सामाजिक विषयों में हस्तक्षेप करना उसका प्रयोजन नहीं है।''[3]

स्वामी जी ने धर्म और संस्कृति की जिस रूप में और जिस तरह व्याख्या की है वह अपने आप में उत्कृष्ट मानी जा सकती है। उन्होंने व्यक्ति की मानसिक गरीबी, दूर करने पर अधिक बल दिया क्योंकि इसी के कारण व्यक्ति विचारों की निम्नता रखता है और उसके व्यक्तित्व का विकास संभव नहीं हो पाता। कदाचित उन्होंने भारतीय दर्शन और संस्कृति के आत्मतत्व के मर्म को भली प्रकार से समझ लिया था। वर्तमान समय में संस्कृति और राष्ट्रवाद का जो अतिरंजित और 'लागू करने वाला' रूप सामने आ रहा है वह स्वामीजी को स्वीकार्य नहीं था वे किसी भी प्रकार की उग्रता के विरोधी थे और हृदय परिर्वतन एवं आत्मिक शुचिता के पक्षधर थे। स्वामीजी ने गुरु की तहता को भी स्वीकार किया है और रामकृष्ण परमहंस का प्रभाव उनके जीवन पर सदैव रहा है। उन्होंने गुरु के प्रति आदर व समर्पण की आवश्यकता जताई हैं किन्तु वे मानते थे कि स्वयं गुरु को भी इसके अनुरूप होना होगा कि वे आदर के पात्र बन सके और एक बड़ा उदाहरण प्रस्तुत कर सकें। राष्ट्र की अवधारणा के संबंध में भी वे समर्पण त्याग और कर्मठता जैसे तत्वों को प्रमुखता देते है। वे मानते रहे है कि संघर्ष विरोध और विचारधाराओं के निरर्थक व अवांहित टकराव से राष्ट्र को हानि ही पहुँचती है। ... स्वामी जी ने राष्ट्र के प्रति निष्ठा रखने की आवश्यकता जताई और संस्कृति व संस्कारों में आदर्शवाद के उपयोगी स्वरूप की पहचान करने की बात कहीं। उन्होंने मानव मन को समझने पर बल दिया और भारतवर्ष की चिंतन और मनोविज्ञान की परम्परा को आत्मसात करने को लाभकारी माना, वस्तुतः भारतीय मनोविज्ञान के विकास में भारतीय चिंतकों, दार्शनिकों, ऋषियों एवं मुनियों का विशेष योगदान रहा है और इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि मनुष्य अपने को समझे, आत्मा को पहचाने, योग–ध्यान एवं साधना के द्वारा अपना सर्वतोमुखी विकास कर सके। वेद, उपनिषद, ऋतियां, स्मृतियाँ, संहितायें, अरण्यक ग्रंथ गीता पुराण और वेदान्त दर्शन आदि में भारतीय मनोविज्ञान के तत्व प्राप्त होते है। स्वामी जी इन तमाम पक्षों पर ध्यान देकर अपनी अभिव्यक्ति कर रहे थे और जनसाधारण को प्रेरित का यथोचित प्रयास उन्होंने आजीवन किया। अद्वैत शर्मा ने उनके संबंध में लिखा है कि वे भारतीयों के प्रति वैशिष्ट्य व महत्व गर्भित धारणा रखते हैं– Each Nation Like Each Individual He Said Has One The Me In This Lite Which Is Its Centre The Principal Note With Which Every Other Note Mingles To Form The Harmony If Any Nation Attempts To Throw Of Its National Vitality The Direction Which Has Become Its Own Through The Transmission Of Centuries That Nation Dies. [4]

वास्तव में राष्ट्रवाद का अंतिम लक्ष्य सामाजिक सौहार्द और मानवीयता होना चाहिए लोक कल्याण होना चाहिए जब ये तत्व राष्ट्रवाद की अवधारणा से निकल जाते है तो अनेक प्रकार की संस्कृति और राजनैतिक समस्याएँ उभरती हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने राष्ट्रवाद पर लम्बा विचार विवेचन प्रस्तुत किया है जिसका एक अंश दृष्ट्व्य है'' भारत एक तरफ मतभेदों को सामाजिक नियंत्रण द्वारा तथा दूसरी तरफ एकता की आत्मिक स्वीकृति से पूरा करने की कोशिश करता रहा है। उसने भिन्न नस्लों के बीच दीवारें खड़ी करके गंभीर भूलें भी की है, इन्हें स्थायी मानकर हीनता का सामना भी किया है। परिणामस्वरूप उसने अपने बच्चों के मस्तिष्क को कुंठित तो किया ही अपने सामाजिक सुधारों की जकड़न से उनके जीवन को भी संकुचित किया है। पर सदियों से होते जा रहे नए प्रयोगों के कारण कई सामंजस्य खोज लिए गए।''[5]

स्पष्टतया स्वामी विवेकानंद का ध्येय मानवीयता का पोषण और सौहार्द्रपूर्ण राष्ट्र की कल्पना आधारित व्यवस्था का निर्माण या किन्तु उनके विचारों सिद्धान्तों और आह्वान को समय के साथ अनेक स्वयंभू विद्वानों ने आहत टिप्पणियों के माध्यम से 'मिसकोट' कर दिया और विवेकानन्द की सर्वस्वीकार्यता पर आघात करने के निरर्थक प्रयास किये । वास्तव में विवेकानंद हर वर्ग, हर धर्म और व्यक्ति के लिए ज्ञान प्रेरणा और जीवन उत्कर्ष का विशिष्ट पुंज है जिनके सम्पर्क में आकर वैयक्तिक गुणों में गुणात्मक विकास संभव हो जाता है। कर्मठता जैसे तत्व को इंगित करते हुए उन्होंने फुटबॉल के खेल मैदान में जाकर ईश्वर ढूंढने की बात की मन और शरीर की अवधारणा को हिन्दू–मुस्लिम के सकारात्मक व प्रेरणादायी उदाहरणों से समझाया। उन्होंने बालक से लेकर वृद्ध और घर से लेकर राष्ट्र तक की परिकल्पना को सकारात्मक संदर्भों में प्रस्तुति दी। शारीरिक उत्कृष्टता से ही मानसिक व आत्मिक विकास की अवधारणा की परिपुष्टित करने वाले स्वामी विवेकानन्द केवल भारत वर्ष ही नहीं अपितु विश्व के लिए भी एक आध्यात्मिक सांस्कृतिक और व्यावहारिक थाती हैं, एक उत्कृष्ट धरोहर हैं। धर्म की निरर्थक मान्यताओं और उसके व्यावसायिक उपयोग पर भी उन्होंने अपनी बात रखी है और स्पष्टता वे

धर्म को व्यवसाय की बजाय जनहितकारी स्वरूप में व्यवहार योग्य मानते हैं। आत्मविश्वास और सहृदयता जैसे तत्वों में ही स्वामी जी ने ईश्वर की उपस्थिति मानी है स्वामीजी जिस समय पैदा हुए उस वक्त भारत कुरीतियों, अंधविश्वासों और आडंबर के जंजाल में उलझा हुआ था और अस्पृश्यता, नारी प्रताड़ना तथा वर्ग भेद की सामाजिक स्थितियाँ कठोरता से चल रही थी ऐसे में स्वामी जी ने धर्म के वास्तविक स्वरूप और सनातन संस्कृति के समानधर्मी स्वरूप को जनमानस के सामने सही अर्थों में प्रस्तुत किया। वे अध्यात्मक के राजा राम मोहन राय, धर्म के गांधीजी और संस्कृति के रवीन्द्रनाथ टैगोर कहे जा सकते है क्योंकि उन्होंने निरर्थक रूढियों और धर्म के ठेकेदारों द्वारा बनाई गई सांस्कृतिक परिभाषाओं को सही व उचित रूप दिया। स्वामी जी की प्रासंगिकता आज तक इसी कारण बनी हुई है क्योंकि उनके विचार आज के युग में भी कारगर और उपयोगी हैं। संस्कृति व धर्म लोक कल्याण व आत्मिक उल्लास का नैतिक शुचिताओं के व्यवहार का साधन है। इस बात को स्वामी जी ने प्रखरता के साथ प्रस्तुत किया इस नाते वे श्रेष्ठ है। विवेकानंद के व्यक्तित्व का ही प्रभाव है कि वे आज के युग में भी सर्वाधिक पढ़े जाने वाले महापुरुषों में शामिल है। भारत के बालक से लेकर वृद्ध तक की मानसिकता पर सकारात्मक डालने वाले इस महापुरुष ने अपने उदात्त हृदय और सौहार्द्र का परिचय शिकागों के विश्वधर्म सम्मेलन में ही दे डाला था जग संबोधन में 'लेड़ीज एंड जंटलमैन' की जगह 'सिस्टर्स एंड ब्रदर्स' कहा था इस संबोधन से उनकी अनौपचारिकता व गहरी आत्मीयता का पता चलता है। 'रामकृष्ण मिशन' जैसे संगठन के माध्यम से जनहित का कार्य करने वाले स्वामी विवेकानंद युवाओं के लिए अग्रदूत थे इसी कारण उनके जीवन से प्रेरित होकर 'युवा दिवस' भी मनाया जाता है। उन्होंने भगवे रंग के वास्तविक मर्म को जनता के सम्मुख रखा और हिन्दू धर्म की वैज्ञानिकता के अनेक प्रमाण किये समय के साथ इस धर्म को आहत करने वाली और छवि बिगाड़ने वाली भीतरी बुराईयों की पहचान कर उनसे संघर्ष करने की आवश्यकता जताई। स्वामी जी ने जीवन के अल्पकाल में अनेक ग्रंथों का अध्ययन कर किया था और धर्म के व्यावहारिक तथा आत्मिक स्वरूप की व्याख्या वे कर पाए थे। उन्होंने अनेक स्थानों की यात्रा की और विदेशों में भी गए किन्तु भारत भूमि के प्रति उनका गहरा अनुराग और प्रेम सदैव कायम रहा। उनके जीवन को आधार बनाकर उनके व्यक्तित्व और विचारों को केन्द्र में रखकर शोध कार्य भी हुए है और उनके दिव्य व्यक्तित्व का रहस्य जानने की कोशिश आज तक जारी है किन्तु वे स्वयं को साधारण व्यक्ति मानते थे और सदैव कहते थे कि प्रत्येक मनुष्य के भीतर ईश्वर रहता है व्यक्ति सहृदय से उसे जानने–समझने का प्रयास करे तो उससे साक्षात्कार कर सकता है। वस्तुतः स्वामी विवेकानंद भारत की वैदिक ऋर्षि परम्परा के आदर्श प्रतिनिधि थे। ब्रह्मचर्य, दया करूणा आदि उदात्त गुणों के वे मूर्त रूप थे। उनकी दृष्टि में प्रत्येक प्राणी परमात्मा का ही अंष है। उनकी तर्कशक्ति और ज्ञान अद्वितीय था और उनमें सर्वधर्म समभाव की भावना कूट–कूट कर भरी थी तथा साम्प्रदायिक संकीर्णता उनमें लेश मात्र भी नहीं थी। स्वामी विवेकानन्द भारतीय साहित्य, संस्कृति और वेदान्त दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान थे और इन विषयों पर वे घंटों धारा प्रवाह व्याख्यान दे सकते थे। गद्य के अलावा उन्होंने बंगला, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा में कविताएं भी लिखी हैं। उनकी मान्यता थी कि मौलिकता और प्रतिभा का विकास अपनी मातृभाषा में ही संभव है। वे स्त्री जीवन के विकास के भी पक्षधर थे और स्पष्ट रूप से स्त्रियों व पुरुषों को समान मानते थे। उनकी दृष्टि में संसार के प्रत्येक प्राणी और छोटे से छोटे तत्व का महत्व है जिसकी प्रायः अवहेलना की जाती है किन्तु उचित समय आने पर उसके महत्व का ज्ञान होता है। उन्होंने स्त्री–पुरुष संबंधों, मानव के मनोविज्ञान उसकी सामाजिक वृत्तियों सांस्कृतिक और राष्ट्रीय सरोकार आदि पर विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत किये। मानव मन और व्यवहार की जितनी समझ उन्होंने दर्शायी है उस नाते उन्हें एक सुलझा हुए मनोवैज्ञानिक कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इतने बड़े व्यक्ति होकर भी उन्होंने साधारण योगी की तरह जीवन जिया और अपने अपने व्यवहार से आदर्श प्रस्तुत किया उनको प्रेरणा मानने वाले अनेक युवा व अन्य आयु वर्ग के लोगों में कदाचित स्वामी जी का चतुर्थांश समर्पण, कर्मठता व विवेचन क्षमता नहीं है तभी उन लोगों का व्यक्तित्व भ्रंशित और नैतिक रिसाव से युक्त दिखाई देता है अध्ययन मनन की प्रवृति वर्तमान मानव में उस रूप की नहीं है जो स्वामी जी में थी लोग ज्ञान को रटन्त विद्या मानने लगे हैं और उसकी मौलिकता तथा प्रभाव को वे समझ नहीं सकते क्योंकि स्वामी जी की तरह आयामगत तर्कशक्ति का उनमें अभाव है, यदि इस मानसिक शक्ति का अल्पांश भी उपयोग में लाया जाए तो व्यक्तित्व का सहज विकास हो जाएगा।

नकारात्मक विचार हमेशा लक्ष्य से भटकाते हैं और इस प्रकार के भटकाव से दूर रहने की बात विवेकानंद ने की। वर्तमान समय में आध्यात्मिक गुरू व ईशा फांउडेशन के संस्थापक जग्गी वासुदेव ने स्वामी जी के उक्त विचारों से सहमति जताते हुए अपनी बात रखी है ''आपकी हर इच्छा पूरी हो सकती है बशर्ते कि आप सुलझी हुई मति से तय कर पाएं कि आपको क्या चाहिए ? बहुत से लोग यह तय नहीं कर पाते हैं कि उन्हें क्या चाहिए । मैं हार का मुंह न देखूं', 'व्यापार में नुकसान न हो' इस तरह की नकारात्मक सोच आपके दिमाग में आती है। आप जिस चीज की कामना करते है मन की कल्पना में उसे रूपायित कर लें तभी वह वास्तवकि रूप में साकार होगी। आप घर बनाने से पहले मन में रूप कल्पना करते हैं। फिर नक्शा फिर मकान का निर्माण होता है। नींव रखने के स्तर पर ही मन संदेह करने लग जाए तो आपका घर कल्पना में नहीं बन पाएगा। [6]

स्वामी विवेकानंद नकारात्मक ऊर्जा को तुरंत दूर करने की अवधारण को उचित मानते थे क्योंकि यदि नकारात्मक ऊर्जा या निकृष्ट व गलत विचार हमारे मन मस्तिष्क में थोड़ी देर के लिए भी स्थान पा गये तो कुत्साएं कुंठाएँ और घृणित कल्पनाओं से जनित व्यवहार अपनाने में हमारे मानस को अधिक समय न लगेगा। स्वामी जी को जितना पढ़ा गया उनके विचारों को जितना

प्रस्तुत किया गया उनका हवाला देकर जितनी अभिव्यक्ति हुई उसका परिणाम उस रूप में आ ही नहीं पाया जिस रूप में आना चाहिए। उनकी शख्सियत को पोस्टर बैनर और चुनावी नारों से लेकर औपचारिक कार्यक्रमों और सरकारी भाषणों में संजोया जरूर जाता है लेकिन जैसा हिन्दुस्तान वे चाहते थे जैसी परिवर्तनकारी सोच से उत्कृष्ट व समानता परक बदलाव की कल्पना वे करते थे वो आज तक उस रूप में हो नहीं पाया। 'गुलामगिरी' के सृजनकर्ता ज्योति बा फुले से लेकर 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' वाले गांधीजी तक ने सामाजिक सुधारों के प्रयास किये किन्तु विवेकानंद के विचारों में समाज –निर्माण का जो उद्वेलन है, जो जोश है वह युवाओं का आह्वान करता है कि 'उठो चलो और तब तक न थको, जब तक कि मंजिल प्राप्त न हो जाये' वास्तव में जीवन का मार्ग विभिन्न प्रकार के संघर्षों और झंझावातों से भरा है और सफलता की राह में घोर बाधाएँ हमारा आत्मबल तोड़ने को एवं विश्वास खंडित करने को उद्वत रहती हैं। वही पुरुष श्रेष्ठ है साहसी है जिसमें पुरुषार्थ होता है और जो संघर्षों व बाधाओं से डरकर पलायन नहीं करता। स्वामी विवेकानंद का दर्शन वैयक्तिक, सामाजिक और राष्ट्रीय ऊर्जा की त्रैयी को जागृत करता है। स्वामी जी दर्शन शब्द को सारगर्भित व लोकोपकारी संदर्भ में देखते थे। उन्होंने मानव–मात्र में चेतना जागृति को ही महत्व दिया क्योंकि चेतना जाग्रत होने से व्यक्ति उचित अनुचित का भेद कर सकेगा। वास्तव में चेतना केवल अपनी और विषयों का, संवित का बल ही नहीं है वह क्रियात्मक और सर्जनात्मक ऊर्जा भी है या यह ऊर्जा उसमें रहती है। वह अपनी निजी प्रतिक्रियाएँ निर्धारित कर सकती है या प्रतिक्रियाओं से अलग रह सकती है। वह शक्तियों को केवल प्रत्युत्तर ही नहीं दे सकती अपितु अपने आप में से शक्तियों को सृष्ट या प्रकट भी कर सकती है वस्तुत चेतना चित है और चित शक्ति है स्वामी विवेकानंद की चेतना अन्य विद्वानों की अपेक्षा अधिक उर्जस्थी अतः उनकी स्वीकार्यता और प्रभाव आज तक कायम है। मनुष्य की चेतना प्रकृति की ही चेतना का एक महान रूप होने के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकती। वह मन से नीचे संवृत रूपों में विद्यमान है। वह मन में उन्मंजित होती है वह मन के परे और श्रेष्ठतर रूपों में जा पहुँचेगी। मनोविज्ञानी डॉ. आर. पी. पाठक के अनुसार ''स्वामी विवेकानंद ने चित की चार अवस्थाओं का उल्लेख किया है, उन्होंने अंतिम अवस्था निरूद्ध का उल्लेख नहीं किया। इसका कारण कदाचित यह है कि जब चित का पूर्ण निरोध हो जाता है तब व्यक्ति समाज की स्थिति में पहुँचता है। इसलिए चित्त का पूर्ण रूप से निरूद्ध होना संभव नहीं है।[7]

वास्तव में चित्त की चार अवस्थाओं के विषय में स्वामी विवेकानंद लिखते हैं कि विक्षिप्त अवस्था देवताओं के लिए स्वाभाविक है और मूढ़ावस्था असुरों के लिए। एकाग्र चित्त समाधि की ओर ले जाता है।'' (योग समन्वय– श्री अरविन्द, उत्तरार्द्ध श्री अरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी) विवेकानंद ने ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के समन्वय से व्यवहार करने पर बल दिया जिससे परिणाम सकारात्मक रूप से सम्मुख आ सके। ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों का संबंध पंच महाभूतों से और उनसे संबंधित पंच तन्मात्राओं से जुड़ा है और इस तथ्य को स्वामी विवेकानंद भली–भाँति जानते थे। आज के युग में मानसिक शांति प्राप्त करने हेतु व मनोविकारों व कुंठाओं के परिहार हेतु अनेक क्रियाकलापों का विधान व व्यवहार किया जाता है किन्तु स्वामी विवेकानंद ने अपने दर्शन के माध्यम से मन की कुंठाओं और दुर्विचारों को मिटाने के सरल मार्गों का प्रणयन किया है जिन्हें व्यावहारिक जीवन में भी आत्मसात किया जा सकता है। स्वामी जी नारी मुक्ति और स्त्री विकास के प्रति भी सचेत रहे और इस संबंध में उन्होंने व्यवस्थित विचार प्रस्तुत किये जो आधुनिक स्त्री के विकास को भी गति देने में कारगर है। वास्तव में वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में उत्पादन तकनीकी और संचार क्रांति के कारण हमारे आर्थिक राजनीतिक ढाँचे में उथल–पुथल हो रही है और परम्परागत सामाजिक सांस्कृतिक ढाँचे ध्वस्त हो रहे है, देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ टूट रही है और आर्थिक तथा सामाजिक रूप से असुरक्षा ग्रस्त लोग फिर से जाति धर्म के परम्परागत दायरे में सुरक्षा तलाश रहे हैं। बाजार के माध्यम से वे स्त्री सशक्तिकरण का दावा करते हैं जो नितान्त हास्यास्पद है। स्त्री सशक्तिकरण हेतु मानस की शुद्धि और वैचारिक पवित्रता होनी चाहिए और दिखाई भी देनी चाहिए जो स्वामी जी के विचारों में थी। उन्होंने स्त्री को पूज्य और कर्मवान माना था और सामाजिक विकास व पारिवारिक जीवन हेतु उसकी अनिवार्यता स्वीकार की थी।

स्वामी विवेकानंद ने देशाटन करते हुए मानव जीवन के अनेक नूतन रहस्यों को जाना और दार्शनिक तरीके से उसे प्रस्तुति दी। वे दर्शन के हितकारी व व्यावहारिक तथा उपयोगी स्वरूप के समर्थक थे, वे मानते थे कि दर्शन केवल ज्ञान अभिव्यक्ति या पांडित्य प्रदर्शन का माध्यम ना हो अपितु उसके माध्यम से मानव जीवन को बेहतर बनाने के मार्ग भी ढूंढे जाएँ। स्वामी जी जीवन में जिस स्थान पर भी गये वहाँ उनका प्रभाव रहा क्योंकि उनके विचारों में सत्यता और व्यवहार का सामंजस्य वास्तविक बोध के साथ दिखाई पड़ता था वे आजकल के अधिकांश तथा कथित संन्यासियों की भांति वहीं थे जो केवल लोक व्यवहार में ही तल्लीन रहते है और धर्म तथा ईश्वर को माध्यम मात्र मानते हैं। वास्तव में ईश्वर तो साथ्य है आनंद है और जीवन विकास का प्रतिमान है। स्त्री जीवन के विकास हेतु भी यदि हमारा मन स्वच्छ है तो कदाचित हम इस वर्ग की उन्नति का प्रयास सही अर्थों में कर पायेंगे जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने किया था। प्रेम नंदकुमार ने स्वामी जी द्वारा महिला उत्थान करने के प्रयासों पर लिखा है ''Today We Spear A Lot About Women's Empowerment More Than A Hundred Years Ago, A Young Wandering Sanyasi Noticed That The Condition Of Women All Over India Was Deplorable Swami Vivekanda Noticed That The Sorrows Of Women Were Mainly Due To Illteracy They Simply Bowed To Karma He Dreamt Of The Day He Could Change This State Of Affairs And Give Them A New Deal'[8]

प्रत्येक आयु वर्ग के संबंध में स्वामी जी ने शुचित, नैतिक व लोकोपकारी मान्यताओं तर्कों व तथ्यों

का सहज व प्रभावी प्रस्तुतिकरण किया तथा समस्त वर्गों को अवसाद, निराशा और संबलहीनता की स्थिति से बाहर लाने का प्रयास किया। यद्यपि भारतवर्ष महापुरूषों की कर्मभूमि रहा है और अनेक साधु–संतों का व्यापक प्रभाव समूचे जनमानस पर आज तक कायम है किन्तु स्वामी विवेकानंद का नाम आते ही जो उत्साह और आत्मबल एकाएक जाग्रत हो जाता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। वे आमजन के जीवन को बेहतर बनाने हेतु इसलिये सुझाव दे पाये क्योंकि वे आमजन के साथ सहज रूप से घुल–मिल जाते थे। गरिमा या महिमा का दिखावा करने की प्रवृत्ति उनमें लेश मात्र भी नहीं थी, उनका व्यक्तित्व स्वयंमेव इतना बलशाली और प्रकाशमान था कि उनके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक जन स्वयं को धन्य मानने लगता था।

आज के युग की जो आपाधापी और भाग दौड़ है, इंसान की भावनाओं और सकारात्मक प्रयासों के मूल्यों का जो अनादर है वो कदाचित इसी कारण है कि स्वामी विवेकानंद जैसा पथ प्रदर्शन इस युग में नहीं है। यदि हम स्वामी जी के विचारों पर थोड़ा बहुत भी मनन करें और उसके अनुरूप आचरण करने लगें तो नैतिक दृष्टि से विकास की स्थिति को पा सकते है। नैतिक विकास हमारे उज्ज्वल जीवन के समूचे मार्ग खोल देता है। भारतवर्ष के लोगों और भारतभूमि का भाग्य है कि स्वामी विवेकानंद जैसे महान सन्यासी का अवतरण इस धरती पर हुआ और हमारे जीवन तथा भावी पीढ़ियों के जीवन पर भी उनका सकारात्मक प्रभाव पड़ने की स्थितियाँ उत्पन्न हुई। वे केवल एक संन्यासी या संत नहीं थे अपितु विराट चेतन पुरूष थे जो मन–मस्तिष्क की दशाओं को जानकर दार्शनिक तरीके से उसकी व्याख्या कर देते थे और मानव जीवन के कष्टों व दुश्चिंताओं को समाप्त करने के मार्ग सहज रूप से सम्मुख रख देते थे। हमें गौरवन्वित होना चाहिए कि ऐसे महापुरूष ने हमारे राष्ट्र में जन्म लिया। डॉ. एम. बी. अथरैया ने स्वामी जी के गुणवान व्यक्तित्व के संबंध में लिखा है Swamiji Studied Law It Was Perhaps The Leading Profession At The Time. The Medical Profession Came Next. Competent Lawyers Were Highly Paid Several Lawyers Gave Up Practice To Join The Independence Movement Swamiji Was Their Forerunner. He Could Have Been A Mercenary Lawyer Amassing Wealth Instead He Chose To Be A Missionary'' [9]

उद्देश्य

स्वामी विवेकानंद के विचारों एवं दर्शन में सम्यक संतुलन उद्घाटित करना इस शोध पत्र का मूल उद्देश्य है। स्वामी जी ने धर्म, दर्शन, राष्ट्रवाद की पारम्परिक संमुचित व्याख्या को नकारा कर धर्म, दर्शन एवं राष्ट्रवाद के मानवीय, लोककल्याणकारी, सौहार्द तत्वों को प्रमुख रूप से उभार कर इन अवधारणों को मानव मात्र के लिये समतामूलक, कल्याणकारी स्वरूप प्रदान किया। स्वामी जी ने भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ मूल्यों को भारतीय समाज में सर्वांगीण विकास के लिये उपयुक्त पाया।

निष्कर्ष

उक्त उदाहरण से स्वामी जी के परोपकारी व सहृदय एवं सहायक व्यक्ति होने की बात सिद्ध हो जाती है। उनका व्यक्तित्व आने वाले अनेक पीढ़ियों को व्यक्तित्व विकास व समाज तथा राष्ट्र कल्याण का मार्ग दिखाता रहेगा। ऐसे गौरवशाली पुरूष की हृदय से वंदना।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *उमराव सालोदिया (सम्पादकीय) मधुमती जनवरी 2011, पृष्ठ 7*
2. *साहित्य की संस्कृतिः संस्कृति का साहित्य– राजाराम भादू, मधुमती जनवरी 2011, पृष्ठ 20*
3. *स्वामी विवेकानंद का दलित दर्शन कमल किशोर गोयनका, वैचारिकी, जुलाई अगस्त 2012, पृष्ठ 75*
4. *Ashort Life Of Swami Vivekananda – Advaita Ashram , Page- 69)*
5. *राष्ट्रवाद रवीन्द्रनाथ टैगोर अनुवाद सौमित्र मोहन, पृष्ठ 26*
6. *नकारात्मक विचार भटकाते हैं लक्ष्य से जग्गी वासुदेव, राजस्थान पत्रिका, 4 मार्च 2017 पृष्ठ 6*
7. *भारतीय मनोविज्ञान–डॉ. आर. पी. पाठक, पृष्ठ 145*
8. *The Original Feminist- Prema Nandakumar, The Week Anniversary Special December 30, 2012, Page 10*
9. *Management Guru- Dr. M. B. Athreya, The Week- Anniversary Special December 30, 2012, Page 38*